

विचार बिन्दु

चिंता से चित्त को संताप और आत्मा को दुर्बलता प्राप्त होती है, इसलिए चिंता को तो छोड़ ही देना चाहिए। –**ऋग्वेद**

कृत्रिम बुद्धि बनाम सृजनात्मकता

हमारे देखते-देखते जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धि का हस्तक्षेप, या सहयोग बहुत बढ़ गया है। यह तो बहुत ताजा बात है कि हमारे समाचार पत्रों में ठोक द्वारा दिये गए उत्तरों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इसी तरह हर कोई धिबली शैली की तस्वीरों में खुद को प्रस्तुत कर आनंदित हो रहा है। ये तो मात्र दो उदाहरण हैं। याद करें तो ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे, और जिस द्रुत गति से जीवन में कृत्रिम बुद्धि का योगदान बढ़ता जा रहा है उसे देखते हुए हमें निकट भविष्य में ऐसे और अनेक करिश्मों के लिए तैयार रहना चाहिए। मनोरंजन और आनंद के लिए कृत्रिम बुद्धि के कुछ खेल-तमाशे अपनी जगह ठीक हैं, लेकिन जो लोग गंभीरता से विचार करते हैं वे इसके प्रयोगों को लेकर काफी चिंतित भी हैं।

एक मोटा सवाल तो यही है कि क्या एक समय ऐसा भी आ जाएगा जब कृत्रिम बुद्धि नैसर्गिक बुद्धि को पूरी तरह विस्थापित ही कर देगी? क्या निकट भविष्य में हमें इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि कृत्रिम बुद्धि हमारे निर्देश पर कविता, कहानी, फिल्म, नाटक, संगीत सब तैयार करके देगी और अब तक जो कलावंत ये सारे काम करते रहे हैं वे पूरी तरह बेरोजगार और अप्रासंगिक हो जाएंगे? बेशक यह एक काल्पनिक सवाल है, और हर कोई जानता है कि ऐसा नहीं होगा (क्या पता हो ही जाए!), फिर भी यह सवाल बहुत सारे विचार बिंदु हमारे सामने रख देता है।

पहला सवाल तो यही हमारे सामने आता है कि आखिर सर्जनात्मकता क्या है और कैसे कृत्रिम बुद्धि उससे टकराती है। स्थूल रूप से बात करें तो मौलिकता, नयापन और भावनात्मक गहराई सर्जनात्मकता के ज़रूरी उपदान हैं और ये उपदान फिलहाल तो कृत्रिम बुद्धि में अनुपस्थित हैं। असल में कृत्रिम बुद्धि डेटा आधारित विश्लेषण करती है, भले ही वह डेटा कितना ही विशाल क्यों न हो। विश्लेषण के बाद वह उसी विश्लेषण के आधार पर आपके निर्देशानुसार कुछ जनरेट भी करने की सामर्थ्य रखती है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट करने का प्रयास करता हूं। आप ए आई को प्रेमचंद के सारे उपन्यास दे दें और फिर उससे चाहें कि वह उनकी शैली में कुछ लिख कर देदे, तो ऐसा करना उसके लिए संभव होगा। वह उनकी भाषा शैली की नकल कर लेगा। सरसरी तौर पर उसका लिखा आप पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि वह बिल्कुल वैसा ही है जैसा प्रेमचंद लिखते थे। लेकिन अभी तक यह मुमकिन नहीं हुआ है कि प्रेमचंद की जो संवेदना थी, उनके जो अनुभव थे, उन सब को भी कृत्रिम बुद्धि अपनी प्रस्तुति में ले आ सके। असल में कृत्रिम बुद्धि खुद कुछ नहीं रचती है, वह हमारे रचे को रीसाइकल करती है – इस बात को समझा जाना चाहिए।

लेकिन क्या इस वजह से हम कृत्रिम बुद्धि को पूरी तरह नकार सकते हैं? क्या उसकी सीमाओं को जानकर हम उसका सीमित उपयोग अपने हित में नहीं कर सकते हैं? क्या मनुष्य की सर्जनात्मकता और कृत्रिम बुद्धि की काबिलियत मिलकर ऐसा कुछ कर सकती है जो स्वागत योग्य हो? इस सवाल का जवाब हमारी फिल्में बखूबी देती हैं। इधर आने वाली बहुत सारी फिल्मों में ऐसे अनेक दृश्य देखने को मिलते हैं जिन्हें वास्तव में फिल्माना बहुत ही कठिन और व्यय साध्य होता, लेकिन कृत्रिम बुद्धि ने उन्हें संभव बना कर फिल्मों की प्रभावोत्पादकता को बढ़ा दिया। संगीत की दुनिया में भी ऐसा ही देखा जा सकता है। अभी हाल में एक रोचक प्रयोग से सामना हुआ। हमारे मित्र, और ‘रष्ट्रदूत’ के सुपरिचित स्तंभकार डॉ रामावतार शर्मा ने एक गीत लिखा और कृत्रिम बुद्धि को निर्देश दिया कि वह उसे संगीतबद्ध कर दे। कृत्रिम बुद्धि ने उसे कुछ-कुछ रैप शैली में संगीतबद्ध कर हाज़िर कर दिया। अब हमारे मित्र ने फिर ए आई से कहा कि उसे गीत शैली में युगल गीत के रूप में ढाल दिया जाए, और पलक झपकते ही उनके शब्द एक सुरीले युगल गीत के रूप में हम सुन रहे थोयह उदाहरण बताता है कि कृत्रिम बुद्धि किस तरह आपकी सहायता कर सकती है।यह भी कि बहुत बार कृत्रिम बुद्धि रचित कृतियों रचनाकार के लिए प्रेरक और मार्गदर्शक भी साबित हो सकती हैं। रचनाकार अपनी प्रतिभा से कृत्रिम बुद्धि रचित कृति की नोक पलक संवार कर उसे मानवीय स्पर्श युक्त और प्रभावशाली बना सकता है। एक तरह से कृत्रिम बुद्धि उसे कच्चा माल सुलभ करा कर उसके श्रम को उसी तरह कम कर सकती है जिस तरह हमारे रसोई घर के उपकरणाें ने गृहिणी के जीवन को सुगम बना दिया है।

कृत्रिम बुद्धि के अवदान को इस नज़र से भी देखा जाना ज़रूरी है।

जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धि का उपयोग बढ़ता जा रहा है, इसको लेकर अनेक आशंकाएं और संदेह भी सर उठा रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल तो यह उठने लगा है कि अगर मैं कृत्रिम बुद्धि से यह कहूं कि वह जयशंकर प्रसाद की शैली में एक कविता रच दे या पिकासो की शैली में एक तस्वीर बना दे (ज़ाहिर है कि अन्य बहुत सारे निर्देश भी मैं दूंगा) तो कृत्रिम बुद्धि की जो सर्जना होगी उसका स्वत्वाधिकार किसका होगा? और यह भी कि अगर मैं उसे निर्देश देकर रवींद्र नाथ टैगोर की शैली की पचास कविताएं लिखवा लूं यह असल और नकल में अंतर कैसे किया जाएगा?

जीवन के बहुत सारे क्षेत्र और काम इस तरह के हैं जहां सर्जनात्मकता की बहुत कम अपेक्षा होती है। वहां कृत्रिम बुद्धि हमारे लिए बहुत मददगार साबित हो सकती है। इससे हम अपना समय और श्रम बचा सकते हैं और उसका बेहतर उपयोग कर सकते हैं। जैसा मैंने पहले भी कहा है, कृत्रिम बुद्धि में बड़े से बड़े डेटा को पलक झपकते ही संसाधित कर देने की अद्भुत क्षमता है और यह क्षमता लगातार बढ़ती जा रही है। कृत्रिम बुद्धि का सार्थक उपयोग हम अपनी विरासत के संठाहण और संरक्षण के लिए भी कर सकते हैं। न सिर्फ यह बल्कि उनके प्रदर्शन के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है, और किया जा रहा है। असल में भारतीय वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण में इसका सही उपयोग अभी होना है, और जब होने लगेगा तो हम स्वयं इसकी सामर्थ्य से प्रभावित होंगे।

जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धि का उपयोग बढ़ता जा रहा है, इसको लेकर अनेक आशंकाएं और संदेह भी सर उठा रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल तो यह उठने लगा है कि अगर मैं कृत्रिम बुद्धि से यह कहूं कि वह जयशंकर प्रसाद की शैली में एक कविता रच दे या पिकासो की शैली में एक तस्वीर बना दे (ज़ाहिर है कि अन्य बहुत सारे निर्देश भी मैं दूंगा) तो कृत्रिम बुद्धि की जो सर्जना होगी उसका स्वत्वाधिकार किसका होगा? और यह भी कि अगर मैं उसे निर्देश देकर रवींद्र नाथ टैगोर की शैली की पचास कविताएं लिखवा लूं यह असल और नकल में अंतर कैसे किया जाएगा? क्या इस तरह पूरा परिदृश्य नकली माल से नहीं पट जाएगा? अन्य अनेक नैतिक सवाल भी उठेंगे। मसलन जब मनुष्य कुछ रचता है तो वह अनेक मर्यादाओं का भी खयाल रखता है। कृत्रिम बुद्धि तो उन मर्यादाओं से परे है। इस तरह क्या एक वर्जनारहित और उत्तरदायित्व रहित परिदृश्य नहीं उभरने लगेगा? अभी भी हम देख रहे हैं कि ग्रीक से लोग जो अजीब-ओ-गरीब हरकतें करवा रहे हैं, ग्रीक बिना किसी ना-नुकर के वैसी हरकतें कर देता है। क्या कोई मनुष्य कभी ऐसा करेगा? बात वहीं कि मनुष्य के पास विवेक है, कृत्रिम बुद्धि के पास केवल डेटा है।

लेकिन एक संभावना मैं यह भी देखता हूं कि कल को कृत्रिम बुद्धि को भी सामान्य नैतिकताओं से लैस किया जा सकता है। उसे तो जो सिखाया जाता है वह सीख लेता/लेती है। मतलब यह कि सम्भावनाएं अनंत हैं। तकनीक जितनी तेजी से बदल और समृद्ध हो रही है, हमारे लिए उसकी कल्पना करना भी सम्भव नहीं है। हमारे पूर्वजों ने तो कभी हवा में उड़ने के बारे में भी नहीं सोचा था, हमने कभी यह नहीं सोचा था कि हमारी हथेली में सिमटा मोबाइल नामक एक उपकरण हमारी सारी ज़रूरतों का वन पॉइंट समाधान साबित हो जाएगा। हमने अपने बचपन में कंप्यूटर की कौन कल्पना की थी, जबकि आज वह हमारी जिंदगी का अभिन्न अंग बन चुका है। इसी तरह हम अनजाने में भी कृत्रिम बुद्धि की बहुत सारी सुविधाओं का आज लाभ उठा रहे हैं। भविष्य में इस पर हमारी निर्भरता और अधिक बढ़ेगी, यह निश्चित है।

देखना यही है कि इन सुविधाओं का हम अपने हित में कितना उपयोग कर पाते हैं और किस सीमा तक हम इन सुविधाओं को अपने ऊपर हावी हो जाने की इजाज़त दे देते हैं। आज भी तो यही हो रहा है। बहुत सारे लोग सूचना प्रौद्योगिकी का अपनी कार्यक्षमता में वृद्धि के लिए उपयोग कर रहे हैं और बहुत सारे लोग रीलस जैसी निरर्थक गतिविधि में अपना समय नष्ट कर रहे हैं। बात अंततः हमारे विवेक की है।

–**अतिथि संपादक,**
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राशिफल

सोमवार 28 अप्रैल, 2025
वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत २०८२, भरणी नक्षत्र रात्रि ९:३८ तक, आयुष्मान्मन योग रात्रि ८:०२ तक, किस्त्वुत्न करण दिन ११:०६ तक, चन्द्रमा रात्रि २:५४ से वृष राशि में संचार करेगा।
पंडित अनिल शर्मा
ग्रह स्थिति: सूर्य- मेष, चन्द्रमा- मे़ष, मंगल- कर्क, बुध- मीन, गुरु- वृष, शुक्र- मीन, शनि- मीन, राहु- मीन, केतु- कन्या राशि में।
श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से ७:३२ तक, शुभ ९:१० से १०:४७ तक, धर २:०२ से ३:३४ तक, लाभ अमृत ३:३४ से सूर्यास्त तक।
राहुकाल: ७:३० से ९:०० तक। सूर्योदय ५:५५, सूर्यास्त ६:५४



रामपाल जाट

देवासुर संग्राम में असुरों के नायकों में बुद्धिमान, बलवान एवं अनेक गुण संपन्न नायक रहे हैं। भारत में हिरणकश्यप, रावण, कंस ख्यात नामों में है। यद्यपि हिरणयकश्यप के कुल में भक्त प्रह्लाद, कंस के वंश में श्री कृष्ण तथा रावण के परिवार में विभीषण नायकों के रूप में प्रमुख रहे हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि असुर कोई अलग से जातीय पहचान नहीं थी वरन उनके कर्मों से ही उनकी गिनती असुरों के रूप में हुई। इसे तुलसीदास ने रामचरितमानस में “सुमति कुर्माति सब के उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं।।” चौपाई में प्रकट किया है। इसी को “राम भी चिरंतन है, रावण भी चिरंतन है।” उक्ति में व्यक्त किया है। मानव अपने कर्मों के आधार पर ही सूर और असुर के रूप में अपनी पहचान बनाता है। देवासुर का संधि विच्छेद देव असुर होता है, देव अच्छाई एवं असुर बुराई के मध्य सतत संघर्ष के प्रतीक हैं।

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी एवं अटल बिहारी वाजपेई ऐसा नेतृत्व रहा जिनके सामने अमेरिका

संविधान में शासन की त्रिवेणी व्यवस्था



रामनिवास बैरवा

पूंजीवादी लोकतंत्रों में व्यक्ति-केंद्रित पार्टी आधारित चुनाव प्रणाली सत्ता पर नियन्त्रण करने का माध्यम है तथा सत्ता प्राप्ति के बाद अपने आप को सर्वाधिकार सम्पन्न मानकर शासन चलाना सत्ता पर एकाधिकारवाद को जन्म देता है जिसका खामियाजा अन्ततः देश की जनता को ही भुगतना पड़ता है।

इसी एकाधिकारवादी सत्ता की एक झलक पिछले दिनों देखने को मिली, जब वक्फ़ संशोधन अधिनियम, २०२५ की वैधता को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई तथा सुप्रीम कोर्ट ने आंशिक स्थगान-आदेश पारित कर दिये और सत्ताधारी पार्टी के संवैधानिक पदाधिकारी सुप्रीम कोर्ट

की धौंसपट्टी चल नहीं पाई। दोनों ने ही परमाणु विस्फोटों के समय अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का संज्ञान नहीं लिया जिससे अमेरिका को स्वतः अपने प्रतिबंध वापस लेने के लिए विवश होना पड़ा था। आसुरी शक्ति तभी पनपती है जब उसे समुचित रूप से चुनौती देने वाला नहीं होता है। जी. के. बिरला के अनुसार भारत स्वयं पूर्ण बाजार है।विश्व में उपभोक्ताओं की संख्या में भारत प्रथम स्थान पर है। इसी आधार पर दोनों प्रधानमंत्रियों की दृढ़ता के सामने अमेरिका को ही अपने कदम पीछे लेने पड़े थे। दूसरा भारत कृषि प्रधान देश है। यह लोकोक्ति प्रकृति दत्त सच्चाई है। भारत के पास उपलब्ध संपूर्ण भूभाग में से ५१ प्रतिशत से अधिक भूभाग कृषि योग्य है जो । अमेरिका में यह १६.५७ प्रतिशत है। सयुक्त राज्य अमेरिका की सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी की नवीनतम वर्ल्ड फैक्ट बुक के अनुसार विश्व में सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि में भारत प्रथम (१७,५३,६९४ वर्ग किमी), अमेरिका द्वितीय (१६,५२,०२८ वर्ग किमी) एवं चीन तृतीय (१०,८४,४६१ वर्ग किमी) स्थान पर है। भारत के उत्तर में हिमालय उंची हवाओं को रोकने वाला है, छः ऋतुओं का चक्र इस देश के लिए वरदान है। यहां की जलवायु की विविधता के कारण खाद्यान्न के अतिरिक्त फल, फूल, सब्जी, औषधि, मसाला उत्पादन में भारत का विश्व में विशिष्ट स्थान है। वर्षा, सर्दी, गर्मी विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नों के उत्पादन के लिए अनुकूलता प्रदान करती है। सर्द देशों में फसल उत्पादन अवधि ८ माह तक की है, जबकि भारत में २ और ३ माह की अवधि में भी फसलें उत्पादित होती है।

भारत का किसान कृषि कार्य में विशेषज्ञता प्राप्त है। इसलिए भारत का किसान अमेरिका के राष्ट्रपति से प्रतिस्पर्धा में भी अपना यथोचित स्थान बनाए हुए है। इसी से २०वीं सदी की विश्वव्यापी मंदी में भी भारत की अर्थव्यवस्था स्थिर बनी रही। ३ वर्ष पूर्व विश्वव्यापी कोरोना काल में अर्थव्यवस्था के २६ क्षेत्रों में से कृषि के अतिरिक्त सभी की विकास दर – २३ प्रतिशत तक चली गई थी जबकि कृषि के विकास दर लगभग चार प्रतिशत रही।

अभी भारत के अनेक अर्थशास्त्री ट्रंप टैरिफ को अवसर के रूप में भी प्रस्तुत कर रहे हैं। यह एक प्रकार से ट्रंप टैरिफ के पक्ष में वातावरण बनाने जैसा है। वह यह भूल जाते हैं कि भारत की अर्थव्यवस्था का आधार सकल घरेलू उत्पाद का ७० प्रतिशत तो घरेलू खपत पर निर्भर है। भारत का अमेरिका के साथ वर्ष २०२४–२५ का निर्यात ८६.५१ अरब डॉलर एवं आयात ४५.३३ अरब डॉलर एवं व्यापार अधिशेष ४१.१८ अरब डॉलर रहा है। जिसमें अमेरिका की आवश्यकतानुसार फार्मा, पेट्रोलियम पर अमेरिका ने आयात शुल्क आरोपित नहीं किया हुआ। भारत का निर्यात भारत की १.९ प्रतिशत जीडीपी को भी प्रभावित करता है। भारत पर ९ अप्रैल २०२५ को ट्रंप टैरिफ का आगाज २६ प्रतिशत टैरिफ आरोपित कर किया गया है। अमेरिकी टैरिफ के व्यापार प्रसन्न होकर इसे भारत के लिए अवसर बता रहे हैं कि चीन पर ३४ प्रतिशत, वियतनाम पर ४६ प्रतिशत, बांग्लादेश पर ३७ प्रतिशत की तुलना में भारत पर टैरिफ कम है और वहीं यह

भी युक्ति गढ़ रहे हैं कि भारतकोष में तीन से आठ अरब डॉलर की ही हानि होगी। जबकि उसकी तुलना में अवसरों की संभावना अधिक है। इसके लिए नोमुरा के प्रतिवेदन का उल्लेख कर रहे हैं जिसके अनुसार भारत सबसे कम प्रभावित होने वाला देश है। इसमें इस युक्ति का भी सहारा लिया जा रहा है कि टेक्सटाइल क्षेत्र में भारत को लाभ होने से २०२७ तक ५ लाख नौकरियां बढ़ेंगी। वहीं ट्रंप टैरिफ को ९० दिन के लिए स्थगित करने पर भी ताली बजा रहे हैं। जबकि अभी इस टैरिफ के कारण से विजय भर में अनिश्चितता का वातावरण बना हुआ है। इस ९० दिन की अवधि के लिए रोक का कारण अमेरिका शेयर और ब्रॉड बाजार में अप्रत्याशित गिरावट के साथ बढ़ते व्यापार असंतुलन और तरलता संकट, ऋण-आय असंतुलन, टेस्ला का एशियाई कारोबारी चीनी कंपनी के हाथों खोना तथा फेडरल रिजर्व बैंक की चेतावनी की टैरिफ वृद्धि से उपजी अनिश्चितता स्थायी आर्थिक हानि पहुंचा सकती है जिससे पूर्ण रोजगार बढ़ाने और महंगाई नियंत्रित रखने के लक्ष्य प्राप्ति खारे में होगी। वैसे वे भूल जाते हैं कि अमेरिका और भारत दोनों ने द्विपक्षीय व्यापार को वर्तमान १३१.८४ अरब डॉलर से बढ़ा कर वर्ष २०३० तक ५०० अरब डॉलर करने के लक्ष्य की घोषणा की है। जिसमें एफ-३५ डिफेंस जेट्स, रेयर और मिनरल, मेडिटेक काँट्रिडज को चीन का विकल्प बनाने की चर्चा भी है। वैसे भी अमेरिका वह देश है जिसकी अर्थव्यवस्था में कॉर्पोरेट करों का योगदान सर्वाधिक है। जो अपने हितों की चिंता अन्य देश की

सोया एवं डेंडरी उत्पाद का भारत में ढेर लगा दिया तो तिलहन एवं दुग्ध उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होंगे। इससे उत्पादकों को कम दाम मिलने से कंगाली में आटा गीला वाली कहावत चरितार्थ होगी। दिशा एवं दशा का सह-संबंध है, ट्रंप टैरिफ की जब दिशा ही सही नहीं है तो उसके परिणाम स्वरूप बनने वाली दशा का सही होना कल्पनातीत है।

–**रामपाल जाट,**
राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान
महार्णचायत

प्रतीक है। कार्यपालिका की पूर्णता अन्य संवैधानिक प्राधिकारियों जैसे- सी.ए.जी. महाधिवक्ता, चुनाव आयोग आदि के साथ ही आई.ए.एस, आई.पी.एस. –अनुच्छेद ३१२ (२) और इनके तमाम शासनिक तामझाम से ही-न्यायपालिका की पूर्णता मुख्य-न्यायाधीश, अन्य न्यायाधीशों, राज्य के जजों, न्यायाधिकारियों और नीचे की अदालतों से होती है। विधायिका की पूर्णता सांसदों-विधायकों के चुनाव जीत जाने से ही नहीं होती है बल्कि उनके पीछे आम जनता, किसानों-मजदूरों और अन्य वर्गों के वोट के अलावा उनकी आकांक्षाओं, अपेक्षाओं का प्रतिनिधित्व होने का दबाव भी होता है। यही संविधान की आत्मा भी है।

संविधान की इसी आत्मा को परिलक्षित करते हुए संविधान में उनको भाग ३ में मूल अधिकारों तथा भाग ४ में राज्यों की नीति के निदेशक तत्वों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। मूल अधिकार जहां व्यक्तिगत विषयों से जुड़े हुए हैं, वहीं राज्यों की नीति के निदेशक तत्वों का स्वरूप सामूहिक है, सामुदायिक है, वे समाज के विभिन्न वर्गों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आवश्यकताओं को उनके न्यूनतम स्तर तक प्राप्त करने की बात

कहते हैं। संविधान निर्माताओं ने भारतीय समाज की विभिन्नताओं, विभक्तताओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा है, बहुत हद तक उन्हें भोगा है, इसलिए उन बातों को, उन आवश्यकताओं को रेखांकित किया गया है और कार्यपालिका, विधायिका के किसी भी व्यतिक्रम, या जन आकांक्षाओं की अनदेखी करके संवैधानिक-मानकों का अतिक्रमण किये जाने पर न्यायपालिका को उनकी समीक्षा करने के अधिकार से सम्पन्न किया गया है। उससे भी अधिक, न्यायपालिका को विधायिका और कार्यपालिका को निर्देश देने के अधिकार से भी सम्पन्न किया गया है यह देखने के लिए कि त्रिवेणी की उन दो धाराओं ने, कार्यपालिका और विधायिका ने संविधान में उल्लिखित जन आकांक्षाओं का कहीं उल्लंघन तो नहीं किया है, अतिक्रमण तो नहीं किया है, उन्हें अनदेखा तो नहीं किया है जिसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति के ज़िंदगि लोकतांत्रित व्यवस्था कहीं एकाधिकार में नहीं बदल जाये, जिससे उपजा जन–आक्रोश कहीं अधिकारों का बदलकर किसी अन्य शासन व्यवस्था की तरफ ना चली जाये।

–**रामनिवास बैरवा,**
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि
आयुक्त्व

रानीवाड़ा बायपास पर डेंजर पॉइंट बना हादसों की वजह

स्थानीय प्रशासन और पीडब्ल्यूडी विभाग को जानकारी होने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हुआ, कस्बेवासियों में नाराजगी

रानीवाड़ा, (निसं.)। रानीवाड़ा कस्बे के सांजौर–भीममाल बायपास पर कोट की ढाणी चौराहे के समीप एक डेंजर पॉइंट लगातार दुर्घटनाओं का कारण बन रहा है। स्थानीय प्रशासन और पीडब्ल्यूडी विभाग को जानकारी होने के बावजूद अब तक इस समस्या का समाधान नहीं किया गया है, जिससे कस्बेवासियों में सरकार के प्रति गहरी नाराजगी देखी जा रही है।

जानकारी के अनुसार, दो वर्ष पहले तत्कालीन नगरपालिका ने बिजली बोर्ड कार्यालय के पास पक्का नाला निर्माण कराया था, लेकिन तकनीकी निरीक्षण के अभाव में इसका लेवल सही तरीके से नहीं रखा गया,

जिससे यह नाकारा साबित हो रहा है। इसी नाले का सड़क क्रॉसिंग सड़क के स्तर से ऊंचा होने के कारण वाहन चालक यहां दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं। सड़क की ओर ९० डिग्री का गड्ढा होने से कारें उरतरते ही फंस जाती हैं, जिससे उनके इंजन क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। पिछले दो माह में कम से कम १० कारों को नुकसान हो चुका है।

सामाजिक कार्यकर्ता सुखदेव सिंह बताते हैं कि अधिकांश गुजराती यात्री इस मार्ग से गुजरते समय दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं। भीममाल रेलवे फाटक बंद होने की स्थिति में जल्दबाजी में शॉर्टकट लेने वाले वाहन चालकों को सबसे अधिक परेशानी

हो रही है। स्थानीय ग्रामीणों द्वारा कई बैठकों में प्रशासन से समाधान की अपील की गई, लेकिन पीडब्ल्यूडी विभाग ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। सरपंच प्रतिनिधि मफाराम राणा का कहना है कि इस समस्या को हल करने की जिम्मेदारी पीडब्ल्यूडी विभाग की है, लेकिन अब तक कोई ठोस पहल नहीं हुई है।

गौरतलब है कि रामसीन से रानीवाड़ा के बीच टोल रोड निर्माणाधीन है। यदि विभाग चाहे तो इस समस्या का तुरंत समाधान किया जा सकता है, लेकिन अनदेखी के चलते हादसे बढ़ते जा रहे हैं।

संविदा डॉक्टर्स की सैलरी आधी करने का फैसला

बीकानेर, (निसं)। राजस्थान सरकार ने कांन्ट्रैक्ट पर नरेख जाने वाली डॉक्टर्स की सैलरी आधी करने का फैसला किया है। अब तक कांन्ट्रैक्ट वाले डॉक्टर्स को प्रतिमाह ५६ हजार रुपए सैलरी मिलती थी, जिसे घटाकर २८ हजार रुपए किया गया है। वहीं, नेशनल हेल्थ मिशन के तहत प्रदेश में स्वास्थ्य कर्मियों के कुल २८५५ पदों पर कांन्ट्रैक्ट भर्तियों की जाएगी। इनमें फ़ीमेल हेल्थ वर्कर, एलोपैथी मेडिकल ऑफिसर, मेडिकल लैब टेक्निशियन, सन और फार्मा असिस्टेंट के पद शामिल हैं। सभी नियुक्तियां जिला स्तर पर जिला हेल्थ समितियों के माध्यम से की जाएंगी।

प्रदेश के सभी जिलों की एमबीबीएस डॉक्टर के १६२ पद भी दिए गए हैं। मेडिकल ऑफिसर की योग्यता को ही इस पद के लिए निर्धारित किया गया है। मिशन निदेशक डॉ. भारती दीक्षित की ओर से जारी इस आदेश में डॉक्टर का वेतन २८ हजार ५० रुपए तय किया गया है। बताया जा रहा है कि यह निर्णय पिछले आदेशों से एकदम विपरीत है। ३० मार्च २०२२ को तत्कालीन मिशन

निदेशक डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी ने पूर्णकालिक संविदा डॉक्टरों का वेतन ५६६०० रुपए निर्धारित किया था। यहां तैरफ कि एक मार्च २०२४ को जारी एक अन्य आदेश में भी संविदा डॉक्टरों के लिए यही वेतन तय किया गया था। प्रदेश में वर्तमान में करीब ७०० डॉक्टर्स कांन्ट्रैक्ट पर काम कर रहे हैं। हालांकि, पुराने डॉक्टरों को ५६ हजार ६०० रुपए का वेतन मिलता रहेगा, लेकिन नए डॉक्टरों को घटी हुई राशि मिलेगी। विशेषज्ञों का कहना है कि कांन्ट्रैट का हिस्सा काटने के बाद यह राशि २५ हजार रुपए के आसपास रह जाएगी। आमतौर पर कांन्ट्रैक्ट डॉक्टर कुछ समय बाद पीजी करने या स्थायी पद पर चले जाते हैं। इसलिए भी ये निर्णय किया गया है।



सोमवार २८ अप्रैल, २०२५
वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत २०८२, भरणी नक्षत्र रात्रि ९:३८ तक, आयुष्मान्मन योग रात्रि ८:०२ तक, किस्त्वुत्न करण दिन ११:०६ तक, चन्द्रमा रात्रि २:५४ से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, **चन्द्रमा-**मे़ष, **मंगल-**कर्क, **बुध-**मीन, **गुरु-**वृष, **शुक्र-**मीन, **शनि-**मीन, **राहु-**मीन, **केतु-**कन्या राशि में।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से ७:३२ तक, **शुभ** ९:१० से १०:४७ तक, **धर** २:०२ से ३:३४ तक, **लाभ** अमृत ३:३४ से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: ७:३० से ९:०० तक। **सूर्योदय** ५:५५, **सूर्यास्त** ६:५४

मे़ष
वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल और स्वास्थ्य बढेगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से मुक्त सकते हैं।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आमनन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मकर
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढेगी। परिवार में अतिथियों का आमनन रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। वनते वगे बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मीन
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।